एक रात

कहानी संग्रह

अमरेंद्र मिश्र

अमरेंद्र मिश्र

- मूलत: कथाकार। 'गलत नंबर', 'प्रेत छाया', 'कुछ दूर तक साथ', 'संवाद चुपचाप', 'रात भर छत पर', 'चुनी हुई कहानियाँ', 'उस रात की बात', 'टापू पर अकेले', 'मालिक की मछली' कहानी-संग्रह
- 'कर्मकांड' उपन्यास
- 'खुद के खिलाफ़' कविता संग्रह, मॉरीशस की कवयित्री शकुंतला हवलदार की कृति का हिंदी अनुवाद 'पागल आदमी का गीत'
- 'रेणु' के कथा-साहित्य पर शोध। 'फणीश्वरनाथ 'रेणु' के उपन्यासों में राजनैतिक परिप्रेक्ष्य' शीर्षक पुस्तक
- तेलुगु तथा रूसी भाषा में कहानियाँ अनूदित
- भारत में सांस्कृतिक केंद्र चेन्नई और विदेशों में भारतीय सांस्कृतिक केंद्र-मॉरीशस, अलमाटी और मालदीव में निदेशक के पद पर कार्यरत और उन देशों पर केंद्रित सामाजिक-सांस्कृतिक रिश्तों पर कहानियाँ। 'जवाहरलाल नेहरू एंड एशियन को-ऑपरेशन' किताब रूसी, कजाक और अंग्रेजी भाषा में लेखों के साथ संपादित और प्रकाशित
- महात्मा गाँधी की जीवनी-कजाक भाषा में संपादित व प्रकाशित
- स्वतंत्र लेखन और पत्रकारिता

संप्रति- 'समहुत' हिंदी साहित्यिक त्रैमासिक पत्रिका का संपादन

संपर्क- 'मौसम', 4/516, पार्क एवेन्यू, वैशाली, गाजियाबाद-201010

फोन- 9873525152

₹ 295.00

लिटिल बर्ड पब्लिकेशंस

नई दिल्ली

फोन : 99682-88050, 82879-88726

ISBN 978-93-93091-30-7

एक गीत

अमरेंद्र मिश्र

एक रात

एक रात

अमरेंद्र मिश्र

लिटिल बर्ड पब्लिकेशंस

लिटिल बर्ड पब्लिकेशंस

I.S.B.N # 978-93-93091-30-7
4637/20, शॉप नं.-एफ-5, प्रथम तल, हरि सदन,
अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-110002
मो.: 9968288050, 9911866239
ई-मेल: littlebirdinfo21@gmail.com

प्रथम संस्करण : 2022
© अमरेंद्र मिश्र
मूल्य : ₹ 295/-

आवरण कलाकृति : कुँवर रवीन्द्र
लेज़र कम्पोजिंग : लिटिल बर्ड, नई दिल्ली
मुद्रक : बालाजी प्रिंटर्स, दिल्ली

EK RAAT
by AMRENDRA MISHRA

इस पुस्तक के किसी भी अंश को किसी भी माध्यम में प्रयोग करने के लिए प्रकाशक से लिखित अनुमति लेना अनिवार्य है।

निधि के लिए

अनुक्रम

1.	सीढ़ियां	1
2.	आवाजें	19
3.	उन दो फ्लैट के बीच	27
4.	औराते-बौराते	44
5.	अकेले में	70
6.	सत्संगी	78
7.	छूटते हुए	97
8.	साथ चलते	111
9.	एक रात	123

सीढ़ियां

रोज अल्सुबह वही स्याह छाया आती है जो कुछ ही पल में गाढ़े काले रंग में परिवर्तित होकर उनके बेड के पास खड़ी हो जाती है....एक स्त्री की छाया—काले रंग की साड़ी, सिर आँचल से ढका हुआ, होठों पर सुर्ख लाल रंग की लिपिस्टिक, हाथ की दोनों कलाइयों में पहने हुई काले रंग की भरपूर चूड़ियाँ। केश खुले हुए, दोनों कंधों को ढके लेकिन बहुत रूखे से मानो महीनों से तेल न लगाया हो। उस काले रंग की छाया को देख ऐसा लगता मानो वह उन्हें अपने दोनों बाजुओं से स्वीकार करते अपने साथ ले जाना चाह रही है। उसकी वेशभूषा में जो सबसे डरावनी चीज उन्हें नजर आती है वह है—उसकी लिपिस्टिक जो काले रंगों के बीच एक डरावने और वीभत्स चित्र को सृजित करता है। उस छाया को देख उन्हें ऐसा लगता है मानो काले रंग के साथ लाल रंग का सामंजस्य ठीक नहीं। वह छाया संपूर्ण रूप से काले रंग की हो तो शायद उन्हें इतना भय नहीं लगेगा जितना उसके होठों पर लगी इस लाल रंग की लिपिस्टिक से लगता है। रोज रात को वे उस महान आत्मा को नमन करके सोने चले जाते हैं जिसे प्रस्थान किए अभी कुछ ही हफ्ते हुए हैं। कभी-कभी उनके अवचेतन में वह छाया प्यासे लोगों के बीच खड़ी दिखती है जिसके हाथ में पानी का गिलास तो है लेकिन बिल्कुल खाली जिसमें पानी की एक बूँद भी नहीं है। कभी-कभी वही छाया उनसे पुदीने की गंध पूछती है। कभी वे मधुमक्खियों का भनभनाना देखते हैं और कभी-कभी उन्हें लगता है मानों वे किसी जाल में फँस गए हैं और उन्हें साँस लेने में दिक्कत हो रही है।

कौशल्या के जाने के बाद से यही सब चल रहा है। रोज़ सुबह चार बजे उनके बेड से सटे एक काली-स्याह छाया धीरे-धीरे बढ़ती है....बिल्कुल उनके बेड के पास खड़ी, तनिक झुकते हुए अपने दोनों बाजुओं को फैलाए उन्हें अपने साथ चलने का निमंत्रण देती है और तभी वे अचकचाकर जाग जाते